पाठ २४ गिरे ताल में चंदा मामा

कविता का सारांश

यह कविता में कवि ने एक अचंभे की बात की है। कवि कहते है चंदा मामा ताल में गिरे है अर्थात चंदा मामा का प्रतिबिंब तालब में दिख रहा है। मछुआरा उसे कोई वास्तु समाज कर जाल में फंसाने की कोशिस करता हैं, लेकिन जाल बाहर निकालते ही चंदा मामा अद्रश्य हो जाते है। यह देखकर सब अचंभे में पड़ जाते है की चंदा मामा कहा गए।

शब्दार्थ:

ताल - तालाब

जाल - कोई जालीदार रचना जिसे मछुआरे मछली पकड़ ने के लिए उपयोग करते हैं।

अचंभा - आश्चर्य

अद्रश्य - गायब, दिखाई न पड़ना

प्रश्न-अभ्यास

शबदों का खेल

1. कविता में 'अचंभा' शब्द आया है। कविता पढ़कर अनुमान लगाइए कि इस शब्द का अर्थ क्या हो सकता है?

उत्तर - हम अनुमान लगा सकते हैं कि 'अचंभा' शब्द का अर्थ है, आश्चर्य, अचरज, चकित होना।

2. नीचे दिए हुए किस वाक्य में 'अचंभा' शब्द का सही प्रयोग हुआ है?

- **यह देखकर अचंभा हुआ कि सूरज प्रकाश देता है।**
- **यह देखकर अचंभा हुआ कि चाँद रात में जिखता है।**
- **यह देखकर अचंभा हुआ कि आधे मैदान में बारिश हुई और आधा मैदान सूखा था।**

उत्तर - यह देखकर अचंभा हुआ कि आधे मैदान में बारिश हुई और आधा मैदान सूखा था।

3. इस कविता में चंदा मामा की जगह पर सूरज दादा कहकर इस कविता को पढ़िए। अपनी नई कविता को कॉपी में लिखिए।

उत्तर -

सूरज दादा ताल में गिरे,
सबने देखा सबने देखा,
फँसे जाल में सूरज दादा,
सबने देखा सबने देखा,
सबने देखा एक अचंभा,
मछुआरे ने जाल समेटा,
कहीं नहीं थे सूरज दादा,
कहाँ गए जी सूरज दादा।

मिलकर पढ़िए

चाँद की रोटी, पानी में आई,

मछली फिर भी, खा न पाई।

सोचिए और लिखिए –

1. चाँद की रोटी किसे कहा गया है?

उत्तर – नदी में दिखाई दे रहे चाँद के प्रतिबिंब को चाँद की रोटी कहा गया है।

2. मछली चाँद की रोटी क्यों नहीं खा पाई होगी?

उत्तर - मछली चाँद की रोटी नहीं खा पाइ क्योंकि पानी में जो दिख रहा था वह एक प्रतिबिंब मात्र था।